Peer Reviewed Journal

ISSN 2319-8648

Impact Factor (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

International Peer Reviewed Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Special Issue 20 Vol. II
on

भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श

Indian Society & Ideology of Disability

October 2019

Associate Editor
Dr. Shivaji Wadchkar

Guest Editor
Principal Dr. V.D. Satpute

Assistant Editor
Dr. V.B. Kulkarni
Dr. A.K. Jadhav
Dr. S.A. Tengse

www.publishjournal.co.in

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

निशि उपाध्याय
36. भारतीय समाज और विकलांग विमर्श के संदर्भ में प्रस्तुत शोधालेख 'विकलांगता और मनोविज्ञान' के उपलक्ष्य में नाटक 'बिन बाती के दिप' 145
प्रा.डॉ.संजय व्यंकटराव जोशी
37. विकलांग विमर्श 148
प्रा.खाडे विद्या बाबूराव
38. विकलांग विमर्श स्वरूप एवं अवधारणा 151
डॉ.शेख शहेनाज अहेमद
39. विकलांग विमर्श : 'महादेवी वर्मा की कहानियाँ अलोपी और गुंगिया' 154
प्रा. डॉ. शे. रज़िया शहेनाज़ शे. अब्दुला
40. विकलांग विमर्श और हिंदी साहित्य 159
वाघमारे विकास सुर्यकांत
41. सोशल मीडिया रिपोर्टिंग का सवाल 162
डॉ. वडचकर एस.ए.
42. 'आपका बंटी' उपन्यास में मनोवैज्ञानिक चिन्तन 165
डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
43. 'कुर्सी पहियोंवाली' में विकलांग की समस्याएँ : एक चिंतन 168
डॉ. सतीश वाघमारे
44. भारतीय सहित्य और समाज में विकलांग विमर्श 171
प्रा.डॉ.येल्लूरे एम.ए.
45. विकलांगता और कथासाहित्य 176
देशमुख शहेनाज अ. रफिक
46. विकलांग विमर्श को स्वर देता हिंदी काव्य विश्व 180
डॉ. श्वेता चौधारे
47. समकालीन हिन्दी कहानियों में विकलांग विमर्श 186
डॉ.निम्मी ए.ए
48. हिंदी कहानी साहित्य में विकलांग चरित्र 190
डॉ.कांचनमाला बाहेती
49. विकलांगता एक परिचय 193
प्रा. डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटिल

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II | Octomber 2019 | Peer Reviewed | SJIF | ISSN : 2319 - 8648 | Impact Factor : 7.139

भारतीय समाज और विकलांग विमर्श के संदर्भ में प्रस्तुत शोधालेख 'विकलांगता और मनोविज्ञान' के उपलक्ष्य में नाटक 'बिन बाती के दिप'

प्रा.डॉ.संजय व्यंकटराव जोशी

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग व्यंकटेश महाजन महाविद्यालय, उस्मानाबाद

आज के समाज में विकलांगता यह एक समस्या बनगई है। जिसको समाज जल्दी स्वीकार नही कर पाता [illegible] उसका स्वीकार भी होता है, तो उसका गलत फायदा उठाया जाता है। लेकिन विकलांग होनेवाला हमेशा से यही [illegible] है, की मैं समाज के साथ चलने के लिए क्या कर सकता हुँ। समाज मुझे कब स्वीकार करेगा और अपना [illegible]। इसके लिए वह अपने अंदर छिपे गुणों का विकास करने लगता है। और अच्छे और स्वस्थ लोगों के साथ-[illegible] की कोशिश करता है। कही कही उसका स्वीकार भी होता है। उसका स्वागत भी किया जाता है, लेकिन [illegible] उसको ठोकर भी मारी जाती है। और उसको निराश भी किया जाता है। जिसके लिए उसको हताशा और [illegible] से जाना पडता है। ऐसे समय मे हमें इन लोगों की मानसिकता को समझना जरुरी होता है। वे लोग तो ऐसे [illegible] समझे जो शारीरिक रुप और मानसिक रुप से स्वस्थ है। जबतक हम विकलांग लोगों की मन और [illegible] को समझ नही लेते तबतक ये लोग समाज मे आदर के पात्र नहीं हो सकते इनकी मानसिकता और [illegible] की मानसिकता अलग होती है। इस बारे में हम यहाँ थोडा जान ले जो, मूलतः मन और मानसिकता से [illegible] है। ये मनोविज्ञान से संबंधित विषय है। मन के चेतन अचेतन या किसी न किसी प्रकार से व्यक्ति के [illegible] को प्रभावित करते है। विशेषतः अवचेत मन मानवी वर्तन को प्रभावित करता है। भारतीय और पाश्चमात्य [illegible] मन संवंधिविचार साधारणतः मन शब्द की उत्पत्ति 'मन्यते अनेन इति मन है' महर्षि यास्क ने अपने ग्रंथ [illegible] मन शब्द की उत्पत्ति 'मनु' से की है जिसका तात्पर्य अवबोधन चिंतन, मनन आदि माना है। प्राचीन [illegible] आचार्यो ने और विद्वानोंने मन और मानसिकता की शक्ति को पहचानकर कार्य किया था और उसके [illegible] की वात की थी आधुनिक मनोविज्ञान में मन और मानसिकता का अलग अलग पध्दति से अध्ययन [illegible]।

[illegible] अरस्तू ने मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान माना है। उन्होंने आत्मा में ज्ञान के अतिरिक्त अन्य कई गुण [illegible] का प्रस्थान किया इससे यह शक्तियों का मनोविज्ञान कहलाया।

[illegible] :- इसे व्यवहार का शुध्द विज्ञान मानते है।

[illegible] फ्रायड :- प्रख्यात मनोवैज्ञानिक काम वासना को ही मनोविज्ञान का आधार मानते है।

[illegible] शुक्ल :- भारतीय विचारक लालजीराम कहते है, मनोविज्ञान यह विज्ञान है जो मन की चेतना और [illegible] क्रियाओं का अध्ययन अपरोक्ष अनुभूति द्वारा तथा मनुष्य की बाह्य क्रियाओं का निरीक्षण करके करता है।

उपर्युक्त मनोविज्ञान और मन, मानसिकता के संक्षिप्त विचारों से यह ज्ञान प्राप्त होता है, की मन और मानसिकता मनोविज्ञान के ही अंग है। जी मन और मानिसिकता मनोविज्ञान के ही अंग है, जो मनुष्य के व्यवहार और वर्तन पर निर्भर होते है। मनुष्य का व्यवहार और मानसिकता को स्वस्थ रखने के लिए स्वस्थ मन का और व्यवहार का होना जरूरी है। समाज में हिनता ग्रंथी, अपराध ग्रंथी जैसे मानसिकता को लिए लोग भी होते है। इनको समजझना और इनकी मानसिकता को समझना जरूरी होता है। इन विभिन्न ग्रंथीयों का निर्माण भी समाज की ही देन है। लोगों मे विभिन्न कमजोरीयां होती है। कोई शारीरिक स्तर पर होती है। कोई मानसिक स्तर पर होती है। ये सारे विषय विकलांगता के अंग होते है। और भी इनमें कई विषयों का अंतर्भाव होता है।

मनुष्य के अंधेपन को लेकर भी एक प्रकार की न्यूनता पैदा होती है। विकलांगता साहित्य का और उसके विभिन्न रचना का विषय भी रही है। साहित्यकार अपने उपन्यास, नाटक और कथाओं में इनका उल्लेख करते है। पात्रों की मानसिकता समाज के लोगो की मानसिकता होती है। क्यों की 'साहित्य समाज का दर्पन होता है।' हिन्दी नाट्य साहित्य में साठोत्तरी दशकों के मौलिक साहित्यकारों में 'डॉ.शंकर शेष' का नाम आदर के साथ लिया जाता है। क्यों की इन्होंने नाटकों को एक नई दिशा प्रदान की नाटकों में अलग अलग प्रयोग इन्होंने किये मंचीय दृष्टि, नेपथ्य के दृष्टि से इत्यादी शंकर शेष ने कुलमिलाकर २२ नाटक लिखे जिसमें इनके १९ नाटक प्रकाशित है। इन्होंने अपने नाटकों मे मनुष्य के विभिन्न विषयों को प्रस्तूत किया है। इनके नाटक ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्राचीन जैसें विषयों पर आधारीत है। इन अलग अलग विषयों के माध्यम से 'शंकर शेष' मानव जीवन की विभिन्न प्रवृत्ति को पाठकों के सामने लाया है, इनके सभी नाटक सफलता के साथ मंच पर खेले गये है। इन्ही नाटकों में एक सफल नाटक इनका है जिसका नाम 'बिन बाती के दीप' है यह इनका मौलिक नाटक है। मध्यमवर्गीय सामाजिक नैतिकता के पतन के साथ पति-पत्नि के पारिवारीक वातावरण का चित्रण बिन बाती के दीप नाटक में प्रस्तुत हुआ है। भारतीय संस्कृति की नारी उदारता के साथ विकलांगता की अवस्था का चित्रण भी नाटककार यहाँ करते है। पत्नि जो अपने पति के अपराध के बाद भी उसको क्षमा करती है, और उसे अपनाती है। नाटक का कथासार इस प्रकार है की, नाटक में दो मुख्य पात्र है। विशाखा और शिवराज 'विशाखा' अंधी है जिसके अंधेपन का जिम्मेदार उसका पति शिवराज है। इसका कारण ये की 'विशाखा' एक प्रतिभाशाली औरत है जो अच्छि साहित्यकार है वह उपन्यासकार है यह जो लिखने के लिए उपन्यास कहती है। उसका पति 'शिवराज' लिखता है लेकिन उपन्यासकार का नाम वह अपना देता है और एक प्रसिध्द उपन्यासकार के रुप में दुनिया के सामने आता है। 'विशाखा' के अंधेपन का फायदा उठाने की कोशिश 'शिवराज' करता है। यह बात विशाखा को पता नही है। लेकिन 'आनंद' नामक व्यक्ति से जो विशाखा का मित्र है, यह बात पता चलती है तो उसको ठेंस लग जाती है। उसको दुःख होता है। लेकिन वह अपने पति को माफ कर देती है। वह आनंद को कहती है, मुझ जैसे अंधी का हात थामनेवाला कौन था आनंद, उसके कारण आज में जिवीत हूँ। 'विशाखा' के सामने यह भी बात स्पष्ट होती है की गलत दवा डालकर 'शिवराज' ने ही उसको अंधा किया है। 'विशाखा' निराश तो है लेकिन वह अपने पति के प्रति रुष्ठ नही है 'आनंद' का इस बात को लेकर खुलासा होने के बाद वह आनंद को कहती है।

विशाखा :- आनन्द ये पत्र पाठको ने शिव को लिखे है न विशाखा को ये सभी पत्र पाठकों ने उस लेखक को लिखे है जो लिखने के क्षणो मे महान था। नाम बदल जाने से पाठकों की भावना नही बदलती।

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

डॉ.शेष की सबसे पहले प्रकाशित रचना यह नाटक माना जाता है। इस नाटक में नाटककार ने स्त्री-पुरूष संबंधों के विभिन्न आयामों की चर्चा की है। नारी के समर्पित भाव, त्यग और नि:स्वार्थ स्वरुप को यहाँ उजागर करने की कोशिश की है। यह 'विशाखा' के जीवन का संघर्ष है। जिसमें नैतिकता और अनैतिकता के विचार प्राप्त होते है। 'शिवराज' कवि है, लेकिन केवल नाम का है। अपनी महत्वकांक्षा को पूरा करने के लिए विशाखा को धोका देता है। 'शिवराज' विशाखा को धोका देकर 'मंजू' नामक स्त्री के साथ शादी करने का वादा भी करता है। वह भी एक मजबूर होती है। 'शिवराज' जैसे लोगों का पर्दाफाश नाटककार ने किया है। जो समाज में जी रहे है और 'विशाखा' जैसे स्त्री जो अंधी है, उसकी विकलांगता का फायदा उठाते है। उसको विकलांग करने के जिम्मेदार भी है। 'बिन बाती के दीप' यह नाटक 'विशाखा' की अंधी आखों का प्रतिक है। नाटककार शंकर शेष प्रस्तुत नाटक के माध्यम से 'शिवराज' जैसे पति और पुरूषों का भांडाफोड करते है। जो अपनी महत्वकांक्षा और स्वार्थ, झूठी प्रतिष्ठा के लिए उनका गलत इस्तेमाल करते है। विकलांगो के मन और मानसिकता की कदर नही करते उनको धोका देते है। ऐसे लोगों की नाटककार भर्त्सना करते है।

संदर्भ सूची :-

1 आधुनिक हिन्दी कहानियों मे युवा मानसिकता - डॉ.पद्मा चामले
2 [illegible] के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक विवेचन - डॉ.सोनम सिरसाठ
3 शंकर शेष समग्र नाटक - सं.हेमंत कुकरेती